श्रेष्ठ समाज के लिए नैतिक, आध्यात्मिक एवं मानव मूल्य प्रेरित

शिक्षा दर्पण

शिक्षकों के लिए विशेष प्रकाशन

शिक्षा प्रभाग की समाचार पत्रिका | मई - 2014 | ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू (राज.)

जीवन के लिए एज्युकेशन आवश्यक है और आजकल मैजॉरिटी समझने लगी है कि एज्युकेशन में आध्यात्मिकता जरूरी है, नहीं तो परिवर्तन नहीं हो सकता। इसलिए स्कूल, कॉलेज और युनिवर्सिटी के सभी क्लासेस में इस आध्यात्मिक नॉलेज को शामिल करो। इससे बच्चों में परिवर्तन आएगा और वो अपने मां-बाप को भी बदल सकते हैं। अव्यक्त बापदादा (15-12-2008)

दीक्षांत समारोह में बाएं से दाएं की ओर मंचासीन है डॉ. एस विश्वनाथन, ब्र.कु. मृत्युंजय, ब्र.कु. रमेश, डॉ. आर. मीनाक्षी सुंदरम्, दादी जानकी जी, दादी हृदयमोहिनी जी, डॉ. एम. रामानाथन, ब्र.कु. निर्वैर, ब्र.कु. मोहिनी, ब्र.कु मुन्नी, ब्र.कु करूणा एवं ब्र.कु. पांड्यामणि।

परामर्श दाता

राजयोगी निर्वैर जी
महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़ एवं अध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग

राजयोगी मृत्युंजय जी
कार्यकारी सचिव, ब्रह्माकुमारीज़ एवं उपाध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग

राजयोगिनी शीलू बहन जी
मुख्यालय संयोजिका, शिक्षा प्रभाग

प्रधान सम्पादक

राजयोगी डॉ. हरीश शुक्ल जी
राष्ट्रीय संयोजक, शिक्षा प्रभाग

सम्पादक मण्डल

ब्र.कु. सुन्दरलाल जी, हरिनगर, दिल्ली
ब्र.कु. प्रो. एम.के. कोहली, गुड़गाँव
ब्र.कु. डॉ. ममता शर्मा, मेहसाना

प्रकाशक

एज्युकेशन विंग (R.E. & R.F.)
एवं ब्रह्माकुमारीज़

प्रकाशन

ओमशान्ति प्रिटिंग प्रेस, शान्तिवन, आबू रोड

डिजाइनिंग और टाइप सेटिंग

ब्र.कु. चुनेश
वैल्यू एज्युकेशन ऑफिस, शान्तिवन, आबू रोड

अमृत सूची

- मूल्य शिक्षा से ही मिलेगी शिक्षा में एक नई दिशा
- मूल्य आधारित शिक्षा से हो रहा है एक नये समाज का नवनिर्माण
- व्यक्तित्व परिवर्तन का आधार है मूल्यनिष्ठ शिक्षा
- मूल्य शिक्षा से होता है 16 श्रेष्ठ मानवीय कलाओं का विकास
- ...और बना सकते हैं कई जन्मों के लिए श्रेष्ठ भाग्य
- मूल्यनिष्ठ शिक्षा करती है सर्वांगीण व्यक्तित्व का विकास
- नई दुनिया का मार्ग खोलती है ईश्वरीय शिक्षा
- ईश्वरीय ज्ञान से खुलता है तीसरा नेत्र
- दुनियाभर में फैल रहा है ईश्वरीय शिक्षा का प्रकाश
- युवा तेजी से अपना रहे हैं मूल्य शिक्षा
- मूल्य शिक्षा और आध्यात्मिक क्षेत्र में दादियों को 'डी.लिट्' की मानद् उपाधि
- विद्यार्थियों में मूल्यों का संचय जरूरी
- मन को स्वच्छ और धरती को हरा-भरा बनाये अभियान
- अखिल भारतीय बाल व्यक्तित्व विकास शिविर
- मूल्यनिष्ठ शिक्षा से ही बनेगा श्रेष्ठ समाज
- इन विश्वविद्यालयों ने अपनाई मूल्य शिक्षा

निवेदन

शिक्षा प्रभाग के सेवा समाचार फोटो सहित तथा स्व-रचित कविता, गीत, लेख इत्यादि वैल्यू एज्युकेशन ऑफिस, शान्तिवन, आबू रोड के पते पर भेजकर अपना सहयोग प्रदान करें।

E-mail: harishshukla53@yahoo.com/bkchuneshabu@gmail.com
Mobile No.: +91 94276-38887 / +91 94140 -03961

ब्र.कु. डॉ. हरीश शुक्ल
राष्ट्रीय संयोजक, शिक्षा प्रभाग, सुखशान्ति भवन (अहमदाबाद)

प्रस्तावना

मूल्य शिक्षा से ही मिलेगी शिक्षा में एक नई दिशा

स्वतन्त्रता की प्राप्ति के बाद भारत सरकार ने राष्ट्र की आवश्यकताओं और संकल्पनाओं के अनुसार आजादी के मूल्यों को सुनहले पंख देने के लिए प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा आयोगों का गठन करके अत्यन्त सार्थक पहल की। इसके सकारात्मक परिणाम भी शिक्षा जगत् में दिखाई दिए। सैकड़ों वर्षों से मानसिक दासता के बन्धनों में जकड़े भारतीय समाज ने विकास की नई करवटें लेना प्रारम्भ कर दिया। स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व माचिस जैसी अत्यन्त साधारण वस्तु का आयात करने वाला अपना देश जल, थल और नभ में जलपात, तेज रफ्तार से दौड़ती गाड़ियों तथा रॉकेटों का प्रक्षेपण करके विकास की नित-नित नई कहानियों को लिख रहा है। भौतिक विकास की प्रक्रिया निर्बाध गति से जारी है। परन्तु क्या शिक्षा ने अपना उद्देश्य प्राप्त कर लिया है? क्या शिक्षा मनुष्य का यथार्थ मार्गदर्शन कर पा रही है? क्या हमारे शिक्षण संस्थानों में शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना करने में अपने आपको सक्षम पा रहे हैं? क्या हमारे शिक्षण संस्थान व्यक्तित्व और समाज के नवनिर्माण में अपनी प्रभावशाली भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं? कुछ ऐसे प्रश्न मन में उभरते हैं जो शिक्षा जगत् से जुड़े शिक्षाविदों और समाज के बुद्धिजीवियों के मानस-पटल को झकझोरते हैं। हमारे शिक्षण संस्थानों और यहाँ से शिक्षा प्राप्त करके निकलने वाले विद्यार्थियों की दशा और भटकाव की दिशा को देखकर यही लगता है कि बेशक हम शिक्षा के क्षेत्र में निरन्तर नई-नई बुलन्दियों को हासिल करते जा रहे हैं परन्तु व्यक्तित्व के नवनिर्माण की दिशा में भटकते जा रहे हैं। शिक्षा के वास्तविक लक्ष्य का सपना एक धुंधली तस्वीर बनकर हम शिक्षाविदों को आत्म-मंथन करने के लिए प्रेरित कर रहा है।

शिक्षा का मूल उद्देश्य है- विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना और मानव जीवन का उद्देश्य है- पुरुषार्थ करना। इसके लिए हमारा शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आर्थिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास होना आवश्यक है। परन्तु वर्तमान समय शैक्षणिक संस्थानों से निकलने वाले विद्यार्थियों के आचार एवं व्यवहार को देखकर कम से कम तो यह अवश्य ही लगता है कि हमारी शिक्षण पद्धति में कोई न कोई विलुप्त आयाम अवश्य है जो हमारे विद्यार्थियों को प्राप्त नहीं हो रहा है जिसके कारण उनके व्यक्तित्व में अनेक प्रकार की विसंगतियां दिखाई दे रही हैं। वास्तव में, यह राष्ट्र और समाज का बहुत बड़ा नुकसान हो रहा है। जिन विद्यार्थियों के कंधों पर राष्ट्र के निर्माण का बोझ है, उनका जीवन स्वयं के अन्तर्द्वन्द्वों से बोझिल हो रहा है। जिन विद्यार्थियों को ज्ञान की मशाल लेकर समाज को राह दिखानी चाहिए, वे स्वयं निराशा, हताशा, कुण्ठा के गहन अंधकार में भटक रहे हैं।

परन्तु हम सभी शिक्षाविदों के लिए यह परम सौभाग्य और खुशी की बात है कि सर्व मनुष्यात्माओं के परम शिक्षक ज्योतिर्बिन्दुस्वरुप परमपिता परमात्मा शिव इस धरा पर साधारण मनुष्य के तन में अवतरित होकर सत्य ईश्वरीय ज्ञान और मूल्यों की शिक्षा दे रहे हैं। परम शिक्षक द्वारा वर्तमान समय में दिया जा रहा आध्यात्मिक ज्ञान मनुष्य की अन्तर्रात्मा में व्याप्त अज्ञानता के अंधकार को समाप्त करके आन्तरिक रूप से प्रकाशित करने में समर्थ है। वास्तव में, हमारे जीवन में यथार्थ ज्ञान और मार्गदर्शन के अभाव में ही सभी प्रकार की समस्याएं और विसंगतियां उत्पन्न होती हैं। स्वयं परमात्मा शिव द्वारा दी जा रही मूल्य शिक्षा और अध्यात्म ही हम सभी मनुष्यात्माओं के लिए इस धरा पर अनुपम उपहार है। आध्यात्मिक शिक्षा व्यक्तित्व को प्रभावशाली एवं मूल्यनिष्ठ बनाती है जिससे वे एक कर्तव्यनिष्ठ नागरिक बनकर समाज एवं राष्ट्र के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करने में सक्षम हो सकते हैं। स्वयं तथा परमात्मा की अनुभूति करने से जीवन में सभी प्रकार के भटकाव, तनाव, निराशा, हताशा, कुण्ठा इत्यादि सर्व प्रकार की मनोवैज्ञानिक विसंगतियां पूर्णत: समाप्त हो जाती हैं तथा जीवन को सही दिशा प्राप्त हो जाती है। आध्यात्मिक शिक्षा से अविकसित आन्तरिक संवेगों का सही दिशा में परिवर्तन होता है। जिस प्रकार एक कुम्हार बर्तनों का निर्माण करता है उसी प्रकार मूल्य शिक्षा चरित्र निर्माण करके मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना करने का सबसे प्रभावशाली माध्यम और साधन है। चरित्र के बिना जीवन अधूरा है और राष्ट्र की प्रगति असम्भव है। समाज का निर्माण केवल बड़े-बड़े उद्योग-धन्धों, खुली अर्थव्यवस्था, वाणिज्य केन्द्र से ही मात्र नहीं होता है। मानवीय मूल्य जैसे प्रेम, सहयोग, सद्भावना, सत्यता इत्यादि समाज के नवनिर्माण के लिए आवश्यक हैं और यह केवल आध्यात्मिक शिक्षा द्वारा ही सम्भव है। आध्यात्मिक शिक्षा व्यक्ति को उसके वास्तविक स्वरूप का सत्य अनुभव कराती है जिससे धर्म, जाति, रंग-रूप, लिंग इत्यादि का भेद मन से समाप्त हो जाता है और मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना का मार्ग प्रशस्त होता है।

यह मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा जीवन की सर्व समस्याओं का समाधान करके यथार्थ मार्गदर्शन करती है जिससे जीवन में एक नई चेतना और सोच का अभ्युदय होता है। जीवन में हर पल, हर क्षण आन्तरिक खुशी अनुभव होती है। व्यक्तित्व का दिव्यीकरण हो जाता है।

ब्र.कु. मृत्युंजय
उपाध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग, ब्रह्माकुमारीज़

शिक्षा से ही बदलेगी समाज की दशा और दिशा

आबू रोड शान्तिवन में आयोजित मूल्यनिष्ठ शिक्षा के दीक्षांत समारोह में उपस्थित विद्यार्थी

मूल्य आधारित शिक्षा से हो रहा है एक नये समाज का नवनिर्माण

आज भौतिक शिक्षा से लुप्त होते मूल्य किसी भी दृष्टि से मनुष्य के हित में नहीं है। संस्कार विहीन समाज मनुष्य के अस्तित्व के लिए खतरे की घंटी है। परन्तु चिंता की जरूरत नहीं क्योंकि परमात्मा नई शिक्षा से नए समाज के निर्माण का महत्वपूर्ण कार्य करा रहे हैं...

शिक्षा का मूल उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है अर्थात् अन्य गुणों का विकास करने के साथ-साथ उनको दिव्य कर्म करना सिखाना भी शिक्षा का उद्देश्य है। इसे ही विद्यार्थी का दिव्यीकरण कहा जाता है। इसी प्रक्रिया से विद्यार्थी का जीवन सफल होता है। शिक्षा व्यक्तित्व का निर्माण कर उसे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पारंगत करती है। मानव जीवन का उद्देश्य है पुरुषार्थ करना। इसके लिए हमें शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनैतिक और नैतिक सभी नियमों का ज्ञान होना चाहिए। शिक्षा तो समाज एवं राष्ट्र के उत्कर्ष की आधारशिला है। स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है और इसका लक्ष्य चरित्र निर्माण करना है।

शिक्षा आयोगों ने बताया अनिवार्य

सन् 1952 से आज तक जितने भी शिक्षा आयागों का गठन किया गया, सभी ने शिक्षा में आध्यात्मिकता एवं मूल्यों को अनिवार्यत: स्वीकार किया है। गाँधी जी ने शिक्षा के लिए व्यक्तिगत जीवन की पवित्रता को सबसे बड़ी शर्त माना था। रवीन्द्रनाथ टैगोर और डॉ. राधाकृष्णन ने भी यह घोषणा की थी कि आध्यात्मिक पुनरुत्थान के बिना वैज्ञानिक उपलब्धियां विनाश का कारण बनेंगी।

परमात्मा पढ़ा रहे मूल्य शिक्षा

समय का चक्र कहें या परमात्मा का संविधान, जब ऐसी घड़ी इस सृष्टि पर होती है तब शिक्षकों का शिक्षक और गुरुओं का गुरु स्वयं ज्ञान के सागर परमपिता परमात्मा शिव पुन: इस धरती पर अवतरित होकर एक ऐसे विश्व विद्यालय की स्थापना करते हैं जिसमें जाति, उम्र, धर्म, लिंग, सम्प्रदाय के भेदभाव की दीवारें नहीं होती हैं। यहाँ हर एक मनुष्य मूल्यों के सर्वोच्च शिखर पर होता है। यहाँ न कोई मज़हब और न ही किसी तरह के भेदभाव के लिए कोई स्थान होता है। ऐसी दुनिया बनाने के लिए स्वयं परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के तन का माध्यम लेकर मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना कर रहे हैं।

उम्र की नहीं कोई सीमा

परमात्मा के विश्व विद्यालय में उम्र की कोई सीमा नहीं है। क्योंकि परमात्मा आत्माओं को पढ़ाते, न कि शरीर को। परमात्मा का मकसद आत्मा की शक्ति को जागृत कर आत्मा को 16 कलाओं से सम्पन्न बनाना है।

दीक्षांत समारोह में उपस्थित विद्यार्थियों को आशीर्वचन देती हुईं संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी जी।

व्यक्तित्व परिवर्तन का आधार है
मूल्यनिष्ठ शिक्षा

कहा जाता है मूल्यनिष्ठ नागरिक ही मूल्यनिष्ठ समाज का निर्माण करता है। व्यक्ति जितना पढ़ा-लिखा, सभ्य, मूल्यनिष्ठ, सुसंस्कृत एवं चरित्रवान होगा समाज भी उतना ही मूल्यनिष्ठ होगा। जीवन में मूल्यों का समावेश ही सामाजिक व्यवस्था को बदलने का आधार है। इसके लिए हमें बच्चों को बचपन से ही जीवन मूल्य, सद्व्यवहार, शिष्टाचार, ईमानदारी, सच्चाई, सत्यता आदि की शिक्षा देनी चाहिए। क्योंकि बच्चे उस कच्चे घड़े के समान होते हैं जिसे हम जो आकार देना चाहे दे सकते हैं। आज सबसे बड़ी समस्या है कि माता-पिता के ही संस्कार श्रेष्ठ व सुसंस्कृत नहीं है तो वह अपने बच्चों को संस्कारों की शिक्षा कैसे देवें? उनकी ही कथनी और करनी एकसमान न होने से बच्चों पर उनकी बात का प्रभाव नहीं पड़ता है।

समाज में गिरता मूल्यों का नैतिक स्तर, खत्म होती सम्बन्धों की मर्यादा, पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव और आधुनिक जीवन-शैली से हमारी सामाजिक व्यवस्था आज संकट में है। शिक्षा से जहाँ एक ओर लोगों का जीवन स्तर बदला है, वहीं दूसरी ओर मूल्यों के ह्रास से समाज का ताना-बाना कमजोर होता जा रहा है।

शिक्षा संवारती हैं जीवन

शिक्षा से ही जीवन बनता है, संवरता है और नवनिर्माण के क्षितिज की ओर उन्मुक्त होता है। यह सब तभी सम्भव है जब शिक्षा का उद्देश्य सही हो। ज्ञान प्राप्त करना और सेवा के लिए समर्पित होना शिक्षा का मूलभूत आदर्श रहा है। इसकी विस्मृति होने के कारण सारी व्यवस्था गड़बड़ा रही है। इसका सबसे पहला प्रभाव पड़ा है शिक्षक और विद्यार्थी के सम्बन्धों पर। एक समय था जब शिक्षक और विद्यार्थी के बीच गुरु-शिष्य का रिश्ता था। शिक्षक अध्यापन को अपना व्यवसाय नहीं कर्तव्य मानते थे। कर्तव्य के आसन पर जब से जीविका प्रतिष्ठित हुई, सम्मान का भाव लोप हो गया।

हर पल होती है परीक्षा

ईश्वरीय संविधान और शिक्षा दोनों ही मनुष्यों को ऐसे समय में प्राप्त होते हैं जब आत्माओं के अंदर सिर्फ अवगुणों की ही विरासत होती है। दुनिया के दूषित परिवेश में मूल्यों को धारण करना और आत्मा को उच्च संस्कारों से पोषित करना कठिन तप है। परन्तु परमात्मा, एक ऐसे शिक्षक की भूमिका निभा रहे हैं जिसमें माता-पिता, भाई-बंधु का भी सम्बन्ध निहित होता है। इसलिए इस ईश्वरीय शिक्षा के पथ पर चलने में हर पल परीक्षा की घड़ी होती है और आसुरी वृत्तियों के साथ परीक्षा भी होती है।

...21 जन्मों की उपलब्धि

यह ऐसी पढ़ाई है जिसमें हमारा वर्तमान तो बनता ही है, साथ में 21 जन्मों का भी भविष्य सुरक्षित हो जाता है। इस पढ़ाई की रिजल्ट पढ़ाई के साथ ही मिलना प्रारम्भ हो जाती है। परमात्मा के सान्निध्य से हमारा बोल-चाल, रहन-सहन और सोच का स्तर सकारात्मक, मूल्यनिष्ठ और कल्याणकारी हो जाता है।

परमात्मा है परम शिक्षक

अच्छी शिक्षा हमेशा मानव का उत्थान करती है। मुझे गर्व होता है कि बचपन में ही स्वयं परमात्मा मेरा शिक्षक बन गया। मुझे याद ही नहीं है कि मैंने कभी दूसरों का दिल दुखाया या झूठ बोली। बस परमात्मा ने अपनी इस महान शिक्षा से मेरे जीवन में ऐसा उजाला भरा कि आज भी रग-रग में दौड़ रही है। सुबह उठने से लेकर सोने तक सारी दिनचर्या परमात्मा की दी हुई मूल्यनिष्ठ शिक्षा के अनुरुप होती है। मेरा यही प्रयास रहता है कि नई दुनिया बनाने के लिए जो परमात्मा की शिक्षा है वह दुनिया की सभी आत्माओं को दूं। आज लाखों भाई-बहनें परमात्मा द्वारा दी जा रही मूल्यनिष्ठ शिक्षा से अपना जीवन श्रेष्ठ बना रहे हैं। परमात्मा एक सुन्दर समाज का निर्माण कर रहे हैं। ऐसे में न केवल युवाओं को बल्कि समस्त मानव जाति को इसे अपनाने का प्रयास करना चाहिए।

दादी जानकी
मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

मानव मूल्यों की शिक्षा भी जरूरी

आज तकनीकी शिक्षा के साथ-साथ विद्यार्थियों को मानव-मूल्यों की शिक्षा भी जरूरी है। 'असतो मा सद् गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय' के मार्ग पर चलते हुए अच्छा आचरण करें तथा अच्छा काम करके देश का नाम रोशन करें। आज के वैश्वीकरण के युग में यह और भी आवश्यक हो गया है कि हम देश की शिक्षा के स्तर को सुधारकर उसे विश्व स्तर का बनाएं।

रामनरेश यादव
राज्यपाल, मध्यप्रदेश

मूल्य शिक्षा से होता है 16 श्रेष्ठ मानवीय कलाओं का विकास

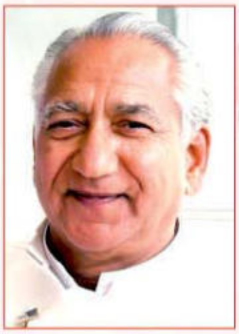

ब्र.कु. निर्वैर
अध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग, ब्रह्माकुमारीज़

आज के प्रतिस्पर्धा और तनाव भरे युग में सुख-शान्तिपूर्वक जीवन जीना भी एक कला है। प्राय: यह देखा जाता है कि जिसके पास धन है उसके पास स्वास्थ्य नहीं होता है और जिसके पास स्वास्थ्य होता है उसके पास धन नहीं होता है। राजयोग के अभ्यास से जीवन में सन्तुलन आता है। धन को सर्व प्राप्तियों और सुखों का आधार मानकर इसकी प्राप्ति के लिए स्वास्थ्य और मूल्यों को गंवाने की भूल करने के कारण ही जीवन में असन्तुलन और दु:ख उत्पन्न हुआ है। परन्तु जीवन में वास्तविक सुख, शान्ति और समृद्धि श्रेष्ठ मानवीय कलाओं के विकास से ही आती है।

ये 16 कलाएं निम्नलिखित हैं:

- **शिक्षा देने की कला:** विनम्रता और कुशाग्रता के साथ शिक्षा इस प्रकार देना चाहिए जो दूसरा सहज ढंग से ग्रहण कर सके।
- **लेखन कला:** यह कला व्यक्ति को वैचारिक रूप से ख्याति प्रदान करती है।
- **प्रशासन की कला:** अपनी कर्मेन्द्रियों और मन-बुद्धि पर नियन्त्रण रखकर मानवीय संवेदनाओं के साथ कर्म क्षेत्र में कर्म करने पर यह कला जीवन में आती है।
- **हास्य कला:** नीरसता को समाप्त कर जीवन में रमणीकता लाने के लिए यह कला आवश्यक है।
- **स्वस्थ रहने की कला:** स्वस्थ मन हमारे स्वास्थ्य का रहस्य है। सकारात्मक चिंतन से सदा स्वस्थ रहने की कला का विकास होता है।
- **व्यवहार की कला:** शुभभावना के साथ दूसरों के साथ सम्बन्ध-सम्पर्क में आने से इस कला का विकास होता है।
- **बातचीत की कला:** आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर बातचीत करने से इस कला में प्रवीणता आती है।
- **परिवर्तन की कला:** राजयोग के निरन्तर अभ्यास से परिवर्तन करने और स्वयं परिवर्तित होने की कला आती है।
- **व्यर्थ को समर्थ बनाने की कला:** सदा गुण ग्रहण करने की प्रवृत्ति से इस कला का विकास होता है।
- **दूसरों को मित्र बनाने की कला:** दूसरों के गुणों को स्वीकार करने और सम्मान देने से यह कला आती है।
- **सीखने की कला:** जीवन में सम्पूर्णता के लक्ष्य को रखने से इस कला का विकास होता है।
- **नेतृत्व करने की कला:** आध्यात्मिक एवं मानवीय गुणों से इस कला का विकास होता है।
- **आगे बढ़ने की कला:** जीवन में सत्यता, साहस और निर्भयता से इस कला का विकास होता है।
- **समाने की कला:** सहनशीलता और धैर्यता से इस कला का विकास होता है।
- **पालना करने की कला:** उदात्त और उदार भाव होने से यह कला जीवन में आती है।
- **तनावमुक्त जीवन जीने की कला:** आत्मा और परमात्मा की अनुभूति होने से यह कला जीवन में विकसित होती है।

बच्चों के प्रति दादी जी के स्नेह सुमन

बच्चे बापदादा के घर की रौनक है। वे महात्मा है और भगवान को भी अति प्यारे लगते हैं क्योंकि बच्चे भोले हैं, सरल है। बच्चे यहाँ की शिक्षा द्वारा चरित्रवान बनते हैं। इसीलिए बच्चों को चरित्रवान बनाने हेतु आज की शिक्षा में आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग की शिक्षा का समावेश किया जाए तो भारत भूमि फिर से स्वर्णमयी, सतयुगी, पावन, देवी-देवताओं की दुनिया बन जाएगी।

दादी प्रकाशमणि
पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

...और बना सकते हैं कई जन्मों के लिए श्रेष्ठ भाग्य

इस कल्याणकारी संगमयुग में परमात्मा न केवल छोटे बच्चों को बल्कि समस्त मानव जाति को मूल्यवान, पुरूषोत्तम एवं श्रेष्ठाचारी बनाने के लिए इस महा शिक्षा के महाअभियान का नेतृत्व कर रहे हैं।

परमात्मा की शिक्षा से अज्ञानता के दलदल में डूबे लोगों का ज्ञान की रोशनी से अज्ञानता का अंधकार दूर होगा। यह वह समय है जिसमें हम परमात्मा की दी हुई शिक्षाओं को जीवन में अपनाकर जन्मों-जन्म का भाग्य बना सकते हैं। मूल्य आधारित शिक्षा ही हमें सदा सही पथ पर अग्रसर करती है। आज यह आवश्यक हो गया है कि बच्चों को मूल्य आधारित शिक्षा पर जोर दिया जाए। इसके लिए शिक्षकों को अपने आचरण, व्यवहार और व्यक्तिगत पवित्रता अर्थात् तन, मन, धन, वचन और कर्म पर ध्यान देना होगा। भारत में शिक्षकों का स्थान प्राचीन काल से ही सर्वोपरि रहा है। वे विद्यार्थियों के ही नहीं बल्कि उनके माता-पिता के भी गुरु होते थे।

शिक्षकों को आज अपनी जिम्मेवारी समझनी होगी। साथ ही माता-पिता को बचपन से ही घर का माहौल ऐसा बनाना चाहिए जिससे बच्चे अपनी सभ्यता को न भूल सके। उन्हें बच्चों के साथ मित्रवत् व्यवहार करना चाहिए।

उनकी किसी भी समस्या को समझदारी के साथ हल करने में उनकी मदद करनी चाहिए। सभ्य माता-पिता ही अपने बच्चों को सभ्य, समाजोपयोगी और राष्ट्रोपयोगी बना सकते हैं। इन बातों पर ध्यान देकर ही हम एक सुसंस्कृत परिवार और सुसंस्कृत राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं। आज दुनिया में भ्रष्टाचार, पापाचार, घूसखोरी, लड़ाई-झगड़े, रिश्तों की गिरती मर्यादा मूल्यनिष्ठ शिक्षा के अभाव का ही नतीजा है।

राष्ट्र की महानता नैतिक मूल्यों से

राष्ट्र की महानता वहाँ के लोगों की एकता एवं नैतिक मूल्यों से है। जैसे भाई-बहन के सम्बन्ध में पवित्रता व शुद्ध प्रेम मूल्य है। ऐसे मूल्यों को ही नैतिक मूल्य कहा जाता है अर्थात् आंतरिक सुंदरता ही नैतिक मूल्य है। लेकिन आज का मानव संसार में भौतिक वस्तु व पदार्थों को ही अधिक महत्व देते हैं। क्योंकि जीवन में शारीरिक सुख-सुविधा मिलती है अर्थात् बाह्यता भौतिक मूल्य है, क्षण भंगुर है। गाँधी जी के जीवन में नैतिक मूल्य व्यवहार में स्पष्ट देखने में आते थे। उनके जीवन में भौतिकता का महत्व कम था अर्थात् भौतिकता का महत्व आवश्यकता पर निर्भर है।

बाबा ने दी मूल्यों की शिक्षा

जब हम पहले-पहले बाबा के पास आये थे, तो बाबा ने मुझे बताया था कि हम सभी आत्मा हैं। इस नाते से हम सभी आपस में भाई-भाई हैं। तो हमें आपस में कितना प्यार से रहना चाहिए। बाबा ने हमें सर्वप्रथम पारिवारिक मूल्यों की शिक्षा दी थी जिससे व्यक्ति घर और समाज में एकता से रहना सीखता है और एक-दूसरे से स्नेह से बंधा होता है। इस मूल्य से भरपूर व्यक्ति में विश्वास, ईमानदारी, नम्रता, दूसरों को सम्मान देना, सादगी आदि मूल्य स्वत: ही समाये रहते हैं। आज लोग अपनी दैवी संस्कृति को भूलते जा रहे हैं और विदेशों की संस्कृति को अपनाते जा रहे हैं। इससे भी हमारे जीवन में मूल्यों का पतन हुआ है। इसलिए परमात्मा पुन: इस सृष्टि पर अवतरित होकर मानवमात्र को मूल्यों की शिक्षा देकर पुन: दैवी दुनिया की स्थापना कर रहे हैं। जीवन-मूल्यों से सम्पन्न व्यक्ति ही देश का एक अच्छा नागरिक बन सकता है और कर्मों के प्रति सजग रहता है।

दादी हृदयमोहिनी
अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

ब्रह्माकुमारी का कार्य सराहनीय

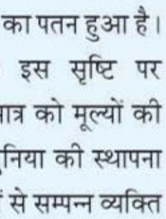

वर्तमान समय शिक्षा स्कूल के क्लास रूम के चार दीवारों में सीमित नहीं होना चाहिए। ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किया जा रहा कार्य सराहनीय है। यह विद्यालय विश्व के लिए अनमोल हीरा है।

अनिरूद्ध जगन्नाथ
तत्कालीन प्रधानमंत्री, मॉरीशस

शिक्षा हो मूल्य आधारित

शिक्षा व्यक्ति की महत्ता को बढ़ाती है और मूल्य आधारित शिक्षा हमें समाज को सार्थक मार्ग पर ले जाने में मदद करती है। शैक्षिक उत्कृष्टता के साथ आध्यात्मिक विकास का प्रयास इस युग में खोए हुए मूल्यों और परम्पराओं को फिर से प्राप्त करने की दिशा में सही कदम है। भारत में शिक्षा का विकास देश की शासन व्यवस्था को लचीला बनाए रखने का प्रमुख कारक है। भारतीय दर्शन और संस्कृति में हमारी अगाध आस्था है और हमारा मानना है कि ऐसे मूल्यों के बीच तालमेल से प्रगति का मार्ग प्रशस्त होगा।

प्रणव मुखर्जी, राष्ट्रपति, भारत

बच्चों को दें एक सुरक्षित संसार

हमारी नैतिक जिम्मेवारी है कि हम अपने बच्चों को एक ऐसा संसार सौंपे जो सुरक्षित, स्वच्छ और उत्पादक हो। जो अपने नीले सामुद्रिक विस्तार, हिमाच्छादित पर्वतों की विशालता, विशाल वनों के हरे विस्तार एवं प्राचीन नदियों की चांदनी धाराओं के माध्यम से मनुष्यों की कल्पनाओं को निरन्तर प्रोत्साहित करता है।

डॉ. मनमोहन सिंह, प्रधानमंत्री, भारत

मूल्यनिष्ठ शिक्षा करती है सर्वांगीण व्यक्तित्व का विकास

शिक्षा एक उद्देश्य पूर्ण प्रक्रिया है। इसका उद्देश्य है व्यक्तित्व का समग्र विकास करना। व्यक्तित्व से तात्पर्य उन सभी आदतों और मानसिक शक्तियों से है जो व्यक्ति को कर्मक्षेत्र में दक्ष और सफल बनाती है। व्यक्तित्व विकास के निम्न मानक है:

बुद्धि गुणांक

शिक्षा द्वारा अर्जित ज्ञान के आधार पर व्यक्ति में होने वाले बौद्धिक विकास को यह बुद्धि गुणांक दर्शाता है जिससे किसी व्यक्ति की परिस्थिति को समझने और उसके अनुसार तुरंत प्रत्युत्तर देने की शक्ति का पता चलता है। परन्तु वर्तमान समय में इसे अच्छा नहीं माना जाता है। क्योंकि अनेक तीव्र बुद्धि के व्यक्ति अपराध तथा अनैतिक कर्म करते हुए पाये जाते हैं जो शिक्षा की मूल भावना के विपरीत है। शिक्षा का उद्देश्य श्रेष्ठ मनुष्य का निर्माण करना है। आइंस्टाईन इस शताब्दी का सबसे तीव्र बुद्धि का वैज्ञानिक माना जाता है परन्तु वह महाविनाशकारी परमाणु बम के अविष्कार के लिए उत्तरदायी भी है।

भावनात्मक गुणांक

शिक्षाविदों ने इसके बाद भावनात्मक गुणांक को व्यक्तित्व विकास का मानक स्वीकार किया। क्योंकि अच्छी भावनाओं से प्रेरित व्यक्ति स्वयं अच्छे कर्म करते हैं तथा दूसरों को भी अच्छे कर्म की ओर प्रेरित करते हैं। परन्तु भावनाएं स्थायी नहीं होती हैं। इनमें उतार-चढ़ाव आता है। प्राय: देखा जाता है कि कुछ व्यक्ति आसानी से लोगों को अपनी भावना के प्रभाव में लेकर उनका भावनात्मक शोषण करते हैं।

नैतिक गुणांक

इसके बाद शिक्षाविदों एवं मनोवैज्ञानिकों ने नैतिक गुणांक को व्यक्तित्व का मानक बताया परन्तु नैतिकता समय, स्थान, समाज और परिस्थिति के अनुसार बदलती है। जो बात किसी समाज में अच्छी मानी जाती है, वही बात दूसरे समाज में अच्छी नहीं मानी जा सकती है। कई लोग अपने देश या समाज के हित में ऐसे कार्य करते हैं जो मानवता के विरुद्ध होते हैं। इसलिए नैतिक गुणांक को भी सम्पूर्ण व्यक्तित्व के श्रेष्ठता की कसौटी नहीं माना जा सकता है।

आध्यात्मिक गुणांक

आधुनिक मनोवैज्ञानिक अवधारणा के अनुसार, यह व्यक्तित्व के श्रेष्ठता का सर्वोत्तम मानक है। 21वीं सदी के प्रारम्भ में ईवन मार्शल और दनाह जोहर नामक मनोवैज्ञानिकों ने इस गुणांक की अवधारणा को विकसित किया। आध्यात्मिक गुणांक के अनुसार, आत्मानुभूति द्वारा अदृश्य सत्ता की अनुभूति करने से मनुष्य सर्व प्रकार के मनोविकारों से मुक्त हो जाता है। उसे कर्मों की गहन गति का ज्ञान हो जाता है। आध्यात्मिक ज्ञान से व्यक्ति के अंदर कर्मकुशलता आती है जिससे वह सदा श्रेष्ठ कर्म करता है। पश्चिमी देशों में नौकरी प्रदान करते समय आध्यात्मिक गुणांक को महत्व दिया जाने लगा है। आध्यात्मिक गुणांक होने पर व्यक्तित्व विकास के अन्य सभी गुणांक स्वत: आ जाते हैं। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा प्रदान किए जाने वाले ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग के नियमित अभ्यास से मनुष्य में आध्यात्मिक गुणांक का विकास होता है।

परमात्मा दे रहे हैं शिक्षा

दादी रतनमोहिनी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

हम श्रेष्ठ संस्कारों से ही अपना जीवन मूल्यवान बना सकते हैं। इसलिए परमात्मा हमें श्रेष्ठ संस्कारों को धारण करने की शिक्षा देते हैं। ज्ञान दान करना सर्वश्रेष्ठ दान माना जाता है क्योंकि हम ज्ञान द्वारा ही सभ्य मानव बना सकते हैं। आज की शिक्षा से व्यक्ति के अंदर संस्कार जागृत नहीं होते हैं क्योंकि उस शिक्षा में मूल्यों का अभाव होता है और शिक्षा देने वाले भी मूल्य रहित होते हैं जिससे उसका प्रभाव व्यक्ति पर नहीं पड़ता है। इसलिए हमें सबसे पहले स्वयं में मूल्यों को धारण करने का प्रयास करना चाहिए। शिक्षा वही सार्थक है जो मनुष्य को शिक्षित करे। साथ ही उसे संस्कारवान भी बनाए। व्यक्ति की पहचान उसके व्यवहार और मूल्यों से होती है, उसके नाम से नहीं। आज की शिक्षा को मूल्य परक बनाये जाने की आवश्यकता है।

नई दुनिया का मार्ग खोलती है

ईश्वरीय शिक्षा

यह बिल्कुल स्पष्ट है कि ईश्वर की शिक्षा किसी भी सूरत में मनुष्य का कल्याण करने वाली ही होगी, क्योंकि इसमें न तो कोई स्वार्थ होगा और न ही हिंसात्मक गतिविधियों की जानकारी बल्कि अहिंसा परमोधर्म के प्रति प्रेरणादायी ही होगी।

परमात्मा ही दे सकते हैं ईश्वरीय शिक्षा

ईश्वरीय शिक्षा केवल परमात्मा द्वारा ही दी जा सकती है। इंसान कभी भी ईश्वरीय शिक्षा का दाता नहीं हो सकता। वर्तमान समय की ईश्वरीय शिक्षा के लिए कोई कागजी प्रमाण-पत्र की आवश्यकता नहीं होती है। ऐसा भी नहीं है कि इसकी परीक्षा वर्ष या दो वर्ष में एक बार होती है बल्कि ईश्वरीय जीवन के प्रत्येक पहलू पर आधारित होती है। जीवन में सत्य और असत्य के बीच के द्वन्द्व, धर्म और अधर्म के बीच की लड़ाई में ही विजय का मार्ग प्रशस्त करती है। इस शिक्षा का परिणाम अंतिम श्वांस तक मिलता है। क्योंकि इस शिक्षा का शिक्षक हमेशा अपने बच्चों के साथ होता है। इसलिए इसका अंतिम रिजल्ट युग बदलाव के अंतिम क्षणों में सर्वोच्च और मान्य होता है। इसका प्रमाण-पत्र लोगों के साथ-साथ स्वयं परमात्मा देता है। यह पढ़ाई पढ़ने वाले को एक सुखद और सुन्दर दुनिया अर्थात् स्वर्ग पारितोषिक के रूप में मिलता है।

इस दुनिया में प्रकृति, वायुमण्डल सभी सतोप्रधान होंगे जहाँ देवी-देवताएं राज्य करेंगे। यह शिक्षा स्वयं का नई दुनिया के लिए मार्ग तो खोलती ही है। साथ में दूसरों के लिए भी प्रकाश स्तम्भ का कार्य करती है। जिसके प्रकाश में व्यक्ति इस शिक्षा के विद्यार्थी बन दैवी स्थिति को प्राप्त करता है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय इस शिक्षा का मूल केन्द्र है और परमात्मा इसका सर्वोच्च शिक्षक।

आध्यात्मिक शिक्षा का केन्द्र है ब्रह्माकुमारीज़

भारतवर्ष में ब्रह्माकुमारियों के पास आध्यात्मिक शिक्षा केन्द्रों का एक विशाल नेटवर्क है। यह शिक्षा समाज से कमजोरियों एवं पापों को निकाल देती है। यह हमारी चेतना को जगाती है जिसके कारण हम सत्य और असत्य के बीच अन्तर करना सीख जाते हैं।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम
पूर्व राष्ट्रपति, भारत

अच्छे शिक्षक बनाने होंगे

देश की युवा शक्ति का टेलेंट सही दिशा में प्रयोग नहीं हो रहा है। हमारी शिक्षा आज पैसा बनाने की मशीन बन गई है। भारत का पाश्चात्यीकरण किए बिना उसे आधुनिक बनाने की आवश्यकता है। देश का निर्माण करने के लिए प्रतिभाओं का विकास करने की आवश्यकता है। शिक्षा राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यदि हम एक अच्छी शिक्षा व्यवस्था चाहते हैं तो हमें अच्छे शिक्षक बनाने होंगे।

नरेन्द्र मोदी
मुख्यमंत्री, गुजरात

ब्र.कु. करूणा, सूचना एवं जनसम्पर्क निदेशक, ब्रह्माकुमारीज़

मूल्यों से होता है आंतरिक शक्तियों का विकास

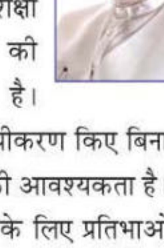

जो लोग मूल्यों को अपने जीवन में अपनाते हैं तो उनमें आंतरिक शक्तियों का विकास होता है। हमारे मूल्य ही हमारे चरित्र के द्योतक होते हैं। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा दी जा रही मूल्यों की शिक्षा को अपनाकर हम अपना जीवन श्रेष्ठ बना सकते हैं। जीवन में मूल्यों को धारण करने के लिए आध्यात्मिक सत्ता के साथ सम्पर्क स्थापित करने की दिशा में हमारा पहला कदम यह होना चाहिए कि हम भौतिकवाद के प्रभाव से मुक्त होकर आत्मिक भाव में स्थित हो जाएं। अपने नैतिक मूल्यों के बारे में जानने एवं उसका विकास करने के लिए हमें अपने आध्यात्मिक स्वरूप की पहचान होना आवश्यक है। क्योंकि हमारे श्रेष्ठ मूल्य हमारे मन, विचारों एवं आध्यात्मिक स्वरूप में निहित होते हैं, न कि हमारे भौतिक स्वरूप में।

विशेष लेख

ईश्वरीय ज्ञान से खुलता है तीसरा नेत्र

डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल
राष्ट्रीय संयोजक, शिक्षा प्रभाग

ईश्वरीय ज्ञान को तृतीय नेत्र कहा गया है। तृतीय नेत्र अर्थात् विवेक। विवेक हमारे जीवन में आ जाने से हमें अच्छे और बुरे का, सच और झूठ का अंतर समझ में आ जाता है। यह विवेक हमारे अंदर ज्ञान से जागृत होता है। यही विवेक हमें पाप कर्मों से बचाता है। ज्ञान से हमारे जीवन में प्रकाश फैलता है। प्रकाश का फैलना ही ज्ञान का उदय होना है।

किसी भी शैक्षणिक संस्था की शोभा उस संस्था में दिए जाने वाले ज्ञान के आधार पर बढ़ती और घटती है। A school is a second Mother. ज्ञान का संचार बच्चे के जीवन में प्रथम माँ करती हैं। अपने बच्चों को ज्ञान देकर उनमें संस्कारों का सिंचन करती है। प्रातःकाल उठते ही परमात्म-स्मृति के पाठ पढ़ाती है। बाद में दिनभर के कार्यों के लिए प्रेरणा देती है।

स्कूल में भी परमात्म-प्रार्थना ही प्रथम सिखाई जाती है। बाद में शिक्षा दी जाती है। यही ज्ञान है जिससे मानव जीवन में निहित संकुचितता, कटुता, कलह-क्लेश, वैर-भाव, व्यथा, वेदना, स्वार्थ कपट रूपी मलीनता समाप्त हो जाती है और ज्ञान के माध्यम से ही सर्व के प्रति शुभकामना, बंधुत्व, मैत्री, समरसता, स्नेह, एकता और सहयोग की भावना का उदय होता है। उसे ही जीवन कहा जाता है। ऐसा समाज ही 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से युक्त हो। विश्व एक परिवार की भावना का उदय होता है। वैसे देखा जाए तो इस दुनिया में इस धरती पर सभी वृक्ष, फूल, फल, पक्षी, नदी, पर्वत सभी आज भी पुलकित है, आनंदित है। केवल मनुष्य ही चिंतित है, अशांत है, प्रसन्न नहीं है। क्यों? जबकि मनुष्य में सबसे अधिक देखने, परखने, समझने की शक्तियां हैं। ऐसी कौन सी बात है जिसने मनुष्य को अंधकार में ला दिया है जिससे मन प्रसन्न नहीं है। सबमें नकारात्मकता आती जा रही है। संकुचितता, अहंकार, वैरभाव, निंदा, कटुता, दूसरों को बुरे भाव से देखने की कृति से, मानसिक जड़ता से, धर्म भेद, भाषा भेद, जाति भेद, वर्ण भेद इत्यादि भेदभाव की दुनिया निर्मित हुई है।

तब प्रश्न उठता है कि क्या मनुष्य के जीवन में खुशियां आएंगी? अगर आएगी तो कैसे? कौन लाएगा? उत्तर यही है कि 'ज्ञानम् तृतीयम् नेत्रम्' ज्ञान से विवेक जागृत होगा। विवेक संस्कारों का सिंचन करेगा। परन्तु यह ज्ञान देगा कौन? ज्ञान देने वाला है शिक्षक। शिक्षक लाखों छात्रों के जीवन में ज्ञान के माध्यम से सद्गुणों का सिंचन करता है, जीवन का सर्जन करता है। व्यक्ति में श्रेष्ठता लाने के लिए ज्ञान का बीज डालता है। जीवन संघर्षों का सामना करने के लिए छात्रों में आत्म-विश्वास, आत्म-सम्मान की भावना को अंकुरित करता है। उत्तम चरित्र का सर्जन करता है और आसुरी वृत्तियों का विसर्जन करता है। यह महान कार्य शब्दों से नहीं, आचरण से करता है। ईसा, बुद्ध, महावीर, विवेकानंद, महात्मा गाँधी आदि तथा प्रकृति ने भी अपने तीसरे सूक्ष्म ज्ञान नेत्र द्वारा ही आत्मा का आलोक विकीर्ण किया है।

सर्जन और विसर्जन का कार्य शिक्षक की तरह ज्ञान देकर परमात्मा ही करते हैं। व्यक्तित्व परिवर्तन से नूतन विश्व परिवर्तन का कार्य। मनुष्य की सारी चिंता, निराशा, दुःखों का विसर्जन कर प्रकाश फैलाने का कार्य। ऐसे ही शिक्षकों का निर्माण समय-समय पर हो रहा है। अपने श्रेष्ठ चरित्र के माध्यम से ज्ञान के द्वारा परमात्म प्रदत्त शक्तियों का संचार करने का कार्य वर्तमान समय इसी धरती पर हो रहा है। परमात्मा के मुख्य तीन कर्तव्य- बाप की तरह पालना देना, शिक्षक की तरह ज्ञान देना, सद्गुरू बन सद्गति देने का कार्य आज भी अविरत रूप से हो रहा है। ऐसे विद्यालय जहाँ वास्तव में ज्ञान दिया जाए, ज्ञान का विवेक के माध्यम से प्रयोग किया जाए और विवेक के आधार से जीवन में मूल्यों को प्रस्थापित किया जाए। ऐसा महान कार्य आज इस धरा पर स्वयं परमात्म पिता द्वारा प्रारम्भ हो गया है। परमात्म पिता की शिक्षा-आचरण की शिक्षा है, संस्कार की शिक्षा है, चरित्र निर्माण की शिक्षा है, राजयोग द्वारा आध्यात्मिक मूल्यों के सर्जन की शिक्षा है, नूतन विश्व के सर्जन की शिक्षा है। यहाँ प्रातः उठते ही स्वयं को सशक्त और विश्व की आत्माओं को समर्थ बनाने के प्रकम्पन्न फैलाने की शिक्षा दी जाती है। परमात्म प्रदत्त राजयोग की शिक्षा का यह ज्ञान प्रकाश स्तम्भ बन आज विश्व की आत्माओं को जगाने का व सत्य मार्ग दिखाने का कार्य कर रहा है। परमात्म शक्ति द्वारा यह महापरिवर्तन का समय है। महापरिवर्तन की गंगा में डुबकी लगाकर पावन बनने का समय है। परमात्म पिता और उनकी शक्तियों को पहचान कर उन्हें आत्मसात् करने का समय है। अभी नहीं तो कभी नहीं।

दिव्य विद्यालय है ब्रह्माकुमारीज़

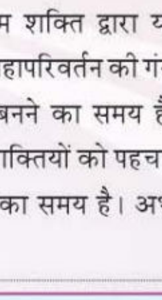

यह अपने आपमें अनोखा संस्थान है, जो लोगों को डिग्री प्रदान किए बिना ही शिक्षित कर रहा है। इसे महाविद्यालय, उत्कृष्ट विद्यालय व दिव्य विद्यालय कहना ज्यादा उचित होगा। क्योंकि यहाँ मूल्यों को जीवन में धारण करने की शिक्षा दी जाती है। यह एक ही संस्थान है जिसने वो काम किया है जो और कोई नहीं कर सकता है।

डॉ. हरी गौतम
पूर्व अध्यक्ष, वि.वि. अनुदान आयोग, नई दिल्ली

दुनियाभर में फैल रहा है ईश्वरीय शिक्षा का प्रकाश

ईश्वरीय ज्ञान का श्रवण करते हुए विदेशी भाई-बहनें।

वर्तमान समय मूल्यों के पतन के दौर से गुजर रही दुनिया के लिए भारत एक आशा की किरण बनकर उभरा है, जहाँ 20वीं सदी के दूसरे एवं तीसरे दशक में यूरोप के विद्वानों ने शान्ति व स्वयं की पहचान तथा आध्यात्मिक सत्य को समझने के लिए भारत की यात्रायें कीं। वहीं श्रीमद् भगवद् गीता एवं अन्य धर्म शास्त्रों का जर्मन एवं अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया गया। साथ ही विक्टोरिया युग के अंत के समय में स्वामी विवेकानंद ने पश्चिमी देशों की यात्रायें कर भारतीय अध्यात्म और योग का संदेश दिया।

प्रथम विश्व युद्ध के बाद स्वामी योगानंद ने योग की विधियों का प्रचार अमेरिका में किया। यह वह समय था जब विभिन्न धर्मों एवं संस्कृतियों का सम्मेलन हो रहा था और भूतकाल की विघटनकारी दूरी समाप्त हो रही थी। प्रथम विश्व युद्ध की विनाशलीला के बाद बहुत से लोग अपने धार्मिक एवं नैतिक मूल्यों का गहराई से पुनः मूल्यांकन करने लगे। यूरोप में 20वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में एक जबर्दस्त आध्यात्मिक जागृति का दौर प्रारम्भ हुआ, जब पश्चिम के विद्वानों ने पूर्व के अध्यात्म का अध्ययन किया और उसे अपने साहित्य, कला एवं संस्कृति में उतारने लगे।

आध्यात्मिक उन्नति के लिए व्यक्तिगत प्रयास आवश्यक

आध्यात्मिकता जीवन का एक ऐसा पहलू है जिसमें सफलता के लिए व्यक्तिगत रूप से प्रयास करने होते हैं। आध्यात्मिकता के लिए आत्म-अनुशासन जरूरी है क्योंकि यह एक आन्तरिक अभ्यास की प्रक्रिया है। आध्यात्मिकता का अर्थ है- अध्ययन, योगाभ्यास एवं अपने अन्तर्मन की जाँच करने के लिए स्व-निरीक्षण करना। आत्म-चिंतन करने वाले व्यक्ति आध्यात्मिकता के क्षेत्र में आने वाली चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करते हैं। अनुभवी एवं योग्य आध्यात्मिक शिक्षकों के दिशा-निर्देशन में योगाभ्यास करने से आध्यात्मिक अनुभवों का लाभ मिलता है।

अनुशासन है जरूरी

आन्तरिक चेतना और विवेक में परिवर्तन तथा व्यवहार को नियंत्रित करने वाले प्रेरकों के विश्लेषण के लिए नियमित आन्तरिक अनुशासन का पालन करने की अध्यात्म में आवश्यकता होती हैं।

आध्यात्मिक ज्ञान मनुष्य को अभय बनाता है

आध्यात्मिक व्यक्ति ही अभय होता है। व्यक्ति जिस सीमा तक स्वयं को इन भौतिक तत्वों से परे अविनाशी आत्मा का अनुभव करने में सक्षम होता है उस सीमा तक मृत्यु के भय से मुक्त होता है तथा अवश्यम्भावी मृत्यु का निश्चिंत भाव से सामना करने के लिए मानसिक रूप से तैयार होता है। एक आध्यात्मिक व्यक्ति परम्पराओं एवं कर्मकाण्डों से मुक्त होकर स्वतंत्र मस्तिष्क से इनमें निहित सत्य का अन्वेषण करता है। वह भय और संदेह, सत्याचरण, सत्य और असत्य कर्म को अदृश्य यथार्थ तथा आयाम के संदर्भ में अच्छे प्रकार से समझता है। वह आत्म-अनुशासित, अहिंसक, पवित्र और संयमी होता है। आध्यात्मिक व्यक्ति ईमानदार, साहसी, कर्तव्यनिष्ठ तथा कर्मकुशल होता है। वह अपने अंदर आध्यात्मिक शक्तियों जैसे सहनशीलता, समायोजनशीलता, अन्तर्मुखता, शान्ति तथा समाने की शक्ति का विकास करता है। वह सर्वोच्च सत्ता के साथ मानसिक सम्बन्ध के कारण आंतरिक बल से जीवन में आने वाली चुनौतियों एवं कठिनाइयों का सदा सामना करने के लिए तैयार रहता है।

पश्चिमी देशों में बढ़ा योगाभ्यास

1960 में यूरोप, अमेरिका और आस्ट्रेलिया के विद्वानों एवं आध्यात्मिकता के इच्छुकों ने एक बार फिर से ज्ञान और प्रेरणा पाने के लिए भारत की ओर कदम बढ़ाया। जीवन की भाग-दौड़ एवं बढ़ते मानसिक तनाव के चलते पिछले 40 वर्षों में पश्चिमी देशों के लोगों के दैनिक जीवन में मेडीटेशन तेजी से प्रचलित हो रहा है। योगाभ्यास इन दिनों पत्र-पत्रिकाओं, लेखों, पुस्तकों एवं पाठ्यक्रमों में मुख्य विषय-वस्तु के रूप में स्थान प्राप्त कर रहा है। बहुत से डॉक्टर और रोगों का उपचार करने वाले विशेषज्ञ जीवन के मानसिक तनावों, व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा के अतिरिक्त मानसिक बोझ तथा कैंसर, हृदय सम्बन्धी रोगों, मधुमेह एवं एड्स के उपचार में योगाभ्यास का परामर्श देने लगे हैं। आज चिकित्सक व्यसन से मुक्त होने के लिए भी योगाभ्यास का परामर्श दे रहे हैं।

युवा तेजी से अपना रहे हैं मूल्य शिक्षा

सफल जीवन का आधार

कहा जाता है कि घड़ा जब कच्चा होता है तो हम उसे जो आकार देना चाहें, दे सकते हैं। उसी तरह विद्यार्थी जीवन होता है। विद्यार्थियों को बचपन से ही नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी जाए तो वह परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए सही मायने में कुछ दे सकेंगे।

आज विश्वभर में बच्चों की उन्नति की ओर सरकार तथा संस्थाओं का ध्यान गया है। नैतिकता ही हर एक राष्ट्र की सच्ची निधि है और बच्चों में नैतिकता का विकास करने से ही नए समाज का अभ्युदय होता है। नैतिकता ही शान्ति की जननी है। देश में नैतिकता का वातावरण बनने से ही सच्ची शान्ति होगी और समाज का स्थायी कल्याण होगा। नैतिकता के मार्ग पर चलने से ही अपराधिक घटनाओं पर नियंत्रण किया जा सकता है।

विद्यार्थियों पर टिकी सभी की आशाएं

मात-पिता की सदैव शुभकामना बनी रहती है कि बच्चे अच्छे बनें। अध्यापक वर्ग भी यही सोचते व शुभ अभिलाषा रखते हैं कि बच्चे अच्छे बनें, वही उनकी पाठशालाओं के मोर-पंख होते हैं। देशवासी भी इच्छा रखते हैं कि बालक-बालिकाएं अच्छे हों। क्यों? क्योंकि सभ्यता और संस्कृति को चिरंजीवी बनाए रखने के लिए सभी की आशाएं उन्हीं पर टिकी होती हैं। बच्चे नए युग की नई फुलवाड़ी के ताजा फूल होते हैं। वे ही देश की नव मुस्कान, नई किरणें और नवचेतना लिए हुए नए समाज के अग्रदूत होते हैं। नैतिक शिक्षा देने का अभिप्राय यही है कि उनका चारित्रिक विकास हो।

एक बार स्कूलों में सर्वेक्षण किया गया तो 96 प्रतिशत विद्यार्थियों का यह विचार रहा कि स्कूल में नैतिक शिक्षा का प्रबंध किया जाए। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय इस प्रकार की शिक्षा को प्रारम्भ से ही अत्यन्त महत्वपूर्ण मानता आ रहा है।

एक अनोखा विश्व विद्यालय

ब्रह्माकुमारीज़ एक ऐसा अनोखा विश्व विद्यालय है जहाँ पर सभी धर्मों एवं जाति के लोगों को नि:शुल्क नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी जाती है। मानव जाति में सर्वश्रेष्ठ समय विद्यार्थी जीवन का है। यही समय है पढ़ने-लिखने, खेलने-कूदने, मौज मनाने का और अपने भविष्य जीवन को उज्जवल बनाने का।

'स्व-प्रबंधन एवं आपदा प्रबंधन' एम.बी.ए. कोर्स के विद्यार्थी को प्रमाण-पत्र प्रदान करते हुए ब्र.कु. मृत्युंजय तथा अन्य।

विद्यार्थी जीवन अनमोल

विद्यार्थी जीवन अनमोल है क्योंकि नैतिक मूल्यों को जीवन में धारण करने की यही उम्र है। यही जीवन का वह मोड़ है, जब ये जानना आवश्यक हो जाता है कि हमारे अंदर क्या-क्या गुण और शक्तियां हैं? और क्या इन गुणों एवं शक्तियों द्वारा आने वाले कल का सामना कर सकेंगे? विद्यार्थी ही समस्त संसार के लिए ऊर्जा के स्रोत हैं और सम्पत्ति भी हैं। अत: इसे पहचानें।

आध्यात्मिक ज्ञान से होता है विवेक जागृत

अनेक धार्मिक अनुभवों से स्पष्ट होता है कि लोगों को नैतिकता के मार्गदर्शन की आवश्यकता है जिससे वे यह जान सकें कि कब, क्या और कैसे करना है। यह माना जाता है कि लोग मूल रूप से अपवित्र, कमजोर एवं अज्ञान हैं इसलिए वे गलत कर्म करते हैं। उनको उच्च नैतिक सत्ता के निर्देशन की आवश्यकता है जबकि आध्यात्मिक अवधारणा के अनुसार गलत कार्य करने वाला व्यक्ति भी मूल रूप से पवित्र और श्रेष्ठ है। आध्यात्मिक पतन होने से ही व्यक्ति गलत कार्य करता है। कोई व्यक्ति अच्छा निर्णय लेने के बाद भी गलत कार्य व्यक्तिगत कमजोरी तथा आध्यात्मिक नियमों एवं कर्मों के परिणाम का सत्य ज्ञान न होने के कारण करता है। आध्यात्मिक ज्ञान का मनन-चिंतन एवं योगाभ्यास विवेक शक्ति को जागृत कर शक्तिशाली बनाता है तथा नैतिक मार्गदर्शन करने वाली आन्तरिक शक्ति को कार्यशील बनाता है। यदि सभी व्यक्ति आध्यात्मिक दृष्टि से विवेकशील बन जाएं तो किसी बाहरी दिशा-निर्देश और कानूनी बाध्यता की आवश्यकता ही नहीं रह जाती है। क्योंकि इस आध्यात्मिक विवेक की अवस्था में मनुष्य न्यायपूर्वक कार्य करता है। अध्यात्म धीरे-धीरे आन्तरिक नैतिक शक्ति तथा मूल्यों का विकास करता है। इसलिए वर्तमान समय में सामाजिक समस्याओं का मूल कारण मूल्यों के पतन में निहित है और इसका एकमात्र समाधान अध्यात्म है।

जब-जब विश्व के श्रेष्ठ चरित्रों या दिव्यता की चर्चा होती है, तब-तब विश्व चिंतकों की दृष्टि ऐसे व्यक्तित्व पर अनायास ही पड़ती है जो वर्तमान जीवन में अपने जीवन से न केवल अपना वरन् दूसरों का भी चरित्र श्रेष्ठ बनाने में जुटे हुए हैं। यह केवल तभी सम्भव है जब व्यक्ति अपने जीवन के प्रत्येक क्षण में आध्यात्मिक मूल्यों को शामिल करें।

मूल्य शिक्षा और आध्यात्मिक क्षेत्र में दादियों को 'डी. लिट्' की मानद् उपाधि

दादी प्रकाशमणि

दादी जानकी

दादी रतनमोहिनी

विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिकों, चिंतकों और मनीषियों ने वर्तमान समय में मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा पर विश्व का ध्यान आकर्षित किया है। ऐसी मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा का समय-समय पर विश्व स्तर पर सम्मान होता आया है। इस दिशा में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय निरन्तर अग्रसर है।

इस समय सारा विश्व व खास भारत आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक मतभेद के संकट से गुजर रहा है। ऐसे समय में शिक्षा का योगदान महत्वपूर्ण है। शिक्षा में जीवन को परिवर्तन करने की शक्ति है। ऐसी ही शिक्षा का सम्मान करने के लिए आज उच्च शिक्षा के क्षेत्र में आमूल क्रान्तिकारी कदम उठाये जा रहे हैं। इस दिशा में मूल्य और आध्यात्मिकता की सबसे सर्वोच्च 'डी.लिट्' की उपाधि मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर राजस्थान ने 30 दिसम्बर, 1992 को संस्था की मुख्य प्रशासिका **दादी प्रकाशमणि जी** को मानद् रूप में प्रदान कर सम्मान दिया था। इसी श्रृंखला में आज मूल्य शिक्षा और आध्यात्मिकता की शिक्षा को विश्वविद्यालय स्तर पर पढ़ाया भी जा रहा है। 20 अगस्त, 2011 को गीतम यूनिवर्सिटी, विशाखापटनम्, आंध्र प्रदेश ने संस्था की वर्तमान प्रशासिका **दादी जानकी जी** को मानद् 'डी.लिट्' की उपाधि से सम्मानित किया। मूल्य शिक्षा के क्षेत्र में यह एक क्रान्तिकारी कदम था।

आज 78 वर्ष की अविरत सेवा-साधना से अपने जीवन में मूल्यों को आत्मसात् करके प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की वरिष्ठ दादियां मूल्य शिक्षा से दूसरों के जीवन को प्रेरणा देती रही हैं और अपने जैसे श्रेष्ठ चरित्रों का निर्माण कर रही है। यह सम्मान ब्रह्माकुमारीज़ के नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों का सम्मान है। 20 फरवरी, 2014 के दिन कर्नाटक के गुलबर्गा विश्वविद्यालय ने भी संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका **दादी रतनमोहिनी जी** को भी 'डी.लिट्' की मानद् उपाधि प्रदान की है। अब इस महान कार्य में भारत के विश्वविद्यालय भी जुड़ रहे हैं। इससे स्वयं सिद्ध है कि ईश्वर प्रदत्त इस विश्वविद्यालय का कार्य और शिक्षा स्वयं आने वाले समय में एक आदर्श स्वर्णिम भारत का निर्माण करेगी।

विद्यार्थियों में मूल्यों का संचय जरूरी

वर्तमान विद्यार्थी जीवन पर ही भविष्य निर्भर है। भविष्य जीवन की नींव विद्यार्थी ही डालते हैं। जैसे इमारत बनाते समय उसकी नींव मजबूत हो इसका खास ध्यान रखा जाता है। क्योंकि जितनी नींव मजबूत होगी, उतनी ही वह इमारत की ऊंचाई व भव्यता का आधार बनेगी। ठीक इसी तरह यदि विद्यार्थी जीवन की ऊंचाई को प्राप्त करना चाहते हैं तो विद्यार्थी जीवन में ही नैतिक मूल्यों का सिंचन करना होगा।

महात्मा गाँधी, स्वामी विवेकानंद ऐसे महापुरुष हैं जिन्होंने नैतिक मूल्यों को अपने जीवन में अपनाया और आज विश्व के सामने उदाहरणमूर्त बन गए। महात्मा गाँधी ने सत्य, अहिंसा का पाठ पूरी दुनिया को पढ़ाया। आज जो विद्यार्थी हैं, कल वही कोई नेता, अभिनेता, खिलाड़ी, डॉक्टर, वकील, वैज्ञानिक, जज और इंजीनियर बनेंगे तथा राष्ट्र की बागडोर उनके हाथों में होगी। ऐसा आपका भी भविष्य हो सकता है। नैतिक मूल्यों का अर्थ है- नीति के अनुरूप व नीतियुक्त, सद्‌गुण व्यावहारिक जीवन। हमारे सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वालों को सुखदाई अनुभव हो। सबके लिए भलाई की भावना हो। दूसरों की भलाई का भी विचार करना, स्वयं भी शान्ति में रहना और दूसरों को भी सुख-शान्ति में जीने में सहयोग देना ही नैतिक मूल्य हैं। यदि हम जीवन की शिक्षा में मूल्यों को शामिल कर दे तो यह जीवन सुगंधित बन जाएगा और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

मूल्य शिक्षा की कमी से होता है आंतरिक शक्तियों का ह्रास

शिक्षा की दिशा में मूल्यों की कमी होने के कारण हमारी सोच इतनी व्यावसायिक और संकीर्ण हो गई है कि हम सिर्फ उसी शिक्षा की मूल्यवत्ता पर भरोसा और विश्वास करते हैं जो हमारे सुख-सुविधाओं के साधन जुटाने में हमारी मदद कर सके। बाकी चिंतन की धारा से हम विमुख होते जा रहे हैं। वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यों की महती आवश्यकता है। आज शिक्षा का अर्थ सिर्फ परीक्षा, अंक प्राप्ति, प्रतिस्पर्धा और व्यवसाय बनकर रह गया है। समय की तीव्र रफ्तार के साथ मानव ने भौतिक जगत्‌ की ऊंचाइयों को तो छू लिया है परन्तु इसी के साथ उसकी आंतरिक शक्तियां भी समाप्त होती जा रही हैं जिसका परिणाम हमें प्रतिदिन न्यूज़ पेपरों और टीवी चैनलों में देखने को मिलता है। आज का मानव परवश है और दिन-प्रतिदिन दिशा-शून्य बनता जा रहा है जिसके फलस्वरूप उसका स्वयं व परिवार से रिश्ता टूटता जा रहा है और आंतरिक शक्तियों के विषय में उसकी सोच संकीर्ण होती जा रही है। यह मनुष्य की अज्ञानता के ही तो लक्षण हैं।

इस पाठ्यक्रम से मिलेगी युवाओं को नई दिशा

संस्कार मूल्य परक होने चाहिए, उसके अभाव में बहुत नुकसान हो रहा है। लोग भौतिकवादी होते जा रहे हैं। आज जो शिक्षा दी जा रही है, उसमें मूल्यों का अभाव है जिसके कारण जीवन से मूल्य विलुप्त होते जा रहे हैं। ब्रह्माकुमारी संस्था की शिक्षा से निश्चित तौर पर सर्वांगीण विकास होगा। इसको देखते हुए कोटा विश्वविद्यालय और ब्रह्माकुमारी संस्था दोनों ने मिलकर पाठ्यक्रम चलाने की पहल की है। इससे अवश्य ही युवाओं को एक नई दिशा मिलेगी और वे संस्कारित होंगे। आज बहुत आवश्यक है कि ऐसी शिक्षाओं को बढ़ावा दिया जाए।

प्रो. विनय कुमार पाठक
उपकुलपति, कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा

मनुष्य का आध्यात्मिक विकास आवश्यक

मूल्य आधारित शिक्षा और अध्यात्म से ही शिक्षा को भौतिकवाद से उत्पन्न समस्याओं से बचा सकते हैं। शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान, कौशल और नागरिकता के संस्कार देना है। विकास केवल भवनों, पुल-पुलियाओं का निर्माण करना नहीं है बल्कि इसमें मनुष्य का आध्यात्मिक विकास भी शामिल है।

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

मूल्यों की शिक्षा वेहद जरूरी

पाठ्यक्रम, शिक्षा की आत्मा होती है। यदि हम शिक्षा में नैतिक शिक्षा को अनिवार्य कर देते हैं तो छात्र जब फील्ड में जाएगा तो अन्य शिक्षा के साथ इसे भी साथ ले जाएगा। नैतिक शिक्षा और अध्यात्म का ज्ञान भी उसके साथ रहेगा। जब साथ रहेगा तब वह जो भी कार्य करेगा, ज्ञान के अनुसार ही करेगा। नैतिक शिक्षा अध्यात्म और मूल्यों को जब हम सिलेबस में लेते हैं तो विद्यार्थी पढ़कर जब समाज का एक हिस्सा बनेगा तब उसके पास बहुत सारी विद्याएं, विवेक रहेगा और वह निश्चित ही इस विद्या का कहीं न कहीं उपयोग करेगा। इससे वह स्वयं सफल होगा और परिवार भी सफल होगा तथा समाज को भी सुधारने में मदद करेगा। वर्तमान समय में जो हालात है उसमें सबसे ज्यादा मूल्यों की शिक्षा आवश्यक है। लोग मूल्य और अध्यात्म को पीछे छोड़ते जा रहे हैं।

आशीष डोंगरे
कुलपति, रामकृष्ण धर्मार्थ फाउण्डेशन विश्वविद्यालय भोपाल, मध्यप्रदेश

मन को स्वच्छ और धरती को हरा-भरा बनाये अभियान

राजयोग शिक्षा एवं शोध प्रतिष्ठान के शिक्षा प्रभाग द्वारा विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों एवं आम नागरिकों को जागरूक करने के लिए 1 जुलाई से 30 सितम्बर तक मन को स्वच्छ एवं धरती को हरा-भरा बनाने के उद्देश्य से एक अभियान शुरू किया गया जिसका समापन 10 अक्टूबर, 2013 को शान्तिवन के डायमण्ड हॉल में एक भव्य समारोह के साथ सम्पन्न हुआ।

एक नजर में

असन्ध सेवाकेन्द्र
सबसे अधिक वृक्षारोपण - 20601
पानीपत सेवाकेन्द्र:
सबसे अधिक कार्यक्रम - 175
जिन्द सेवाकेन्द्र:
सबसे अधिक संदेश - 175

इस अभियान में हरियाणा, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तराखण्ड, चण्डीगढ़ और दिल्ली को मिलाकर 8 राज्यों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों के सेवाकेन्द्रों ने अपने स्थानों पर किए गए कार्यक्रमों की विस्तृत सेवा रिपोर्ट भेजी। हरियाणा के असन्ध सेवाकेन्द्र ने सबसे अधिक 20,601 पौधे लगाये। पानीपत सेवाकेन्द्र ने सबसे अधिक 175 कार्यक्रम किए। जिन्द सेवाकेन्द्र ने पर्यावरण जागरूकता के लिए सबसे अधिक 75,500 सन्देश दिए। इस तरह तीनों सेवाकेन्द्रों को प्रथम पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। साथ ही महाराष्ट्र के नासिक, उत्तर प्रदेश के कानपुर, मध्य प्रदेश के इन्दौर, हरियाणा के रोहतक सेवाकेन्द्रों को भी सम्मानित किया गया। अभियान को सफल बनाने के लिए 23 और 24 मई, 2013 को 2 दिन की ट्रेनिंग और कार्ययोजना शान्तिवन के ट्रेनिंग सेंटर में रखी गई थी जिसमें विभिन्न सेवाकेन्द्रों से आये हुए लगभग 250 भाई-बहनों ने लाभ लिया। ट्रेनिंग में अभियान से सम्बन्धित विस्तृत जानकारी के साथ-साथ बैज, बैनर, पट्टा, फोल्डर्स तथा भाषण करने के लिए सीडी भी दी गई थी। इस अभियान के दौरान विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में 3,200 से अधिक कार्यक्रम आयोजित किए गए जिसमें 16,50,000 से अधिक विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने लाभ उठाया। सेवाकेन्द्रों एवं सार्वजनिक स्थानों पर 160 से अधिक कार्यक्रम आयोजित किए गए जिसमें 1,50,500 लोगों ने लाभ उठाया। पूरे अभियान के दौरान अनेक स्थानों पर आई.पी., वी.आई.पी. भी शामिल हुए। विभिन्न स्थानों में हुए कार्यक्रमों में 1,00,000 से अधिक वृक्षारोपण किए गए।

इस अभियान का उद्देश्य मन के अंदर नकारात्मकता, स्वार्थी दृष्टिकोण, व्यर्थ चिंतन, ईर्ष्या, द्वेष इत्यादि बुराइयों को समाप्त कर मन को स्वच्छ बनाना और धरती पर अधिक से अधिक पौधारोपण कर पर्यावरण प्रदूषण को नियंत्रित करना है।

अखिल भारतीय बाल व्यक्तित्व विकास शिविर

डॉ. ब्र.कु. ममता
सदस्या, कार्यकारिणी
शिक्षा प्रभाग

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय विश्व का एक अनोखा एवं विरल विश्वविद्यालय है। यहाँ समाज के आबाल वृद्ध के लिए उत्तम बनने का, अपनी कलाओं का, गुणों एवं शक्तियों का विकास करने का अवसर मिलता है। 1978 में यू.एन.ओ. की घोषणा के अनुसार बाल वर्ष के उपलक्ष्य में 8 से 15 साल के बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए परमात्म पिता की प्रेरणा से शिक्षा प्रभाग की ओर से बाल व्यक्तित्व विकास शिविर का प्रारम्भ हुआ। परमात्मा के शिक्षक स्वरूप का साक्षात्कार, शिक्षा प्रभाग की नींव डालने का कार्य तत्कालीन प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी के कर कमलों से हुआ। शिक्षा प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु. निर्वैर, उपाध्यक्ष ब्र.कु. मृत्युंजय, राष्ट्रीय संयोजक डॉ. हरीश शुक्ल एवं अन्य सहयोगी शिक्षा क्षेत्र से जुड़े ब्रह्माकुमार भाई-बहनों के सहयोग से पांडव भवन, आबू पर्वत बेहद वरदानी भूमि पर बच्चों की रिमझिम प्रतिवर्ष निरंतर दृष्टिगत होती रही है।

पूरे भारतवर्ष से हजारों बच्चे अपने उत्तम जीवन बनाने की कामना लिए परमात्मा के बेहद घर में नित्य नई शिक्षा प्राप्त करने आते हैं। इस कलियुगी तमोप्रधान वातावरण के बीच कोमल हृदय एवं मन को राजयोग की शिक्षा से सुदृढ़ बनाने के लिए यहाँ भिन्न-भिन्न जाति, धर्म, वर्ग के भेदभाव को भूल एक पिता की संतान बनकर सभी बच्चे अपने व्यक्तित्व का विकास करने आते हैं। सन् 1978 से प्रारम्भ हुए इस बाल व्यक्तित्व विकास शिविर की खुशबू पूरे विश्व में फैल गई। बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु निमित्त शिक्षक एवं आयोजक भाई-बहनें आपसी विचार-विमर्श के द्वारा प्रतिवर्ष एक योजनाबद्ध कार्यक्रम सम्पूर्ण सफलतापूर्वक चलाते आ रहे हैं। फलस्वरूप शिविरों में सम्मिलित होने वाले बच्चे उच्च चिंतन, पवित्र और सहज राजयोग जीवन शैली, सुसंस्कारित चलन, देशप्रेम एवं मानव सेवा की, उच्च और श्रेष्ठ भावना, सत्यता और ईमानदारी तथा अन्य दिव्यगुणों से भरपूर व्यक्तिगत जीवन शैली की शिक्षा प्राप्त कर भारत को पुन: गौरवशाली देवभूमि बनाने का शुभ लक्ष्य रख अपने जीवन का मिशन बनाने में सफल हुए हैं। इन शिविरों में आने वाले बच्चों के जीवन की नींव चरित्रवान एवं समाज के उत्थान के लिए सच्चे सेवाधारी बनाने में अति लाभदायक सिद्ध हुई है।

1978 से लेकर आज तक इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले बच्चों की संख्या में

1978 से प्रारम्भ हुए इस बाल व्यक्तित्व विकास शिविर से शिक्षा प्राप्त कर हजारों बच्चों ने अपना जीवन ईश्वरीय सेवाओं में समर्पित किया है और समाज में उत्तम नागरिक के रूप में पद व प्रतिष्ठा प्राप्त की है। बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु यह शिविर अत्यंत लाभदायक है।

अनुभव

छोटी सी आयु में ही आध्यात्मिकता में गहरी रूचि तथा योग-तपस्या के प्रति आकर्षण बाल व्यक्तित्व विकास शिविर से हुआ। बाबा की पहाड़ी पर बाल शिविर में हुआ योग का अनुभव आज भी याद आता है। संगठन में रहना, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा तथा खेल भावना का विकास बाल शिविर से हुआ। भाषण करने की कला का वरदान भी इस शिविर से ही मिला है।

ब्र.कु. ममता
संचालिका, अलवर, राजस्थान

मुझे याद है वो प्रसंग जब मैं पहली बार भाषण दिया था। मेरे अंदर हिम्मत नहीं थी। उसी समय निर्वैर भाईजी मेरे साथ चलते हुए मुझे अपने भाषण करने से सम्बन्धित अनुभव सुना रहे थे। उन्होंने मुझे प्रेरणा दी और मैंने बहुत ही सुंदर भाषण किया। मेरे भाषण का विषय था, 'मेरे सपनों का भारत'।

ब्र.कु. भारती
राजयोग शिक्षिका, लोटस हाऊस, गुजरात

हमें यह नशा और गौरव है कि हम बच्चों के प्रोग्राम के पहले ग्रुप के बच्चे हैं। जिनके द्वारा बच्चों के कार्यक्रम की शुरूआत हुई थी। हम छोटे थे तो मधुबन में बच्चों को लाने के लिए मना करते थे। एक बार हम बच्चों ने दादी जी को अर्जी डाली कि हम बच्चों को भी मधुबन बुलाया जाए। इस अर्जी को ध्यान में रखकर प्यारे अंकल निर्वैर भाईजी ने पहली बार 1978 में हम बच्चों को बुलाया। 1979 अंतर्राष्ट्रीय बाल वर्ष हमें बहुत याद आता है दिल्ली में राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति ने बच्चों का सम्मान किया था। ऐसे कितने ही अविस्मरणीय अनुभव इस बाल शिविर ने दिए हैं, जो हमारे जीवन के अनमोल भेंट है।

ब्र.कु. गायत्री
राजयोग शिक्षिका, कोलाबा, मुम्बई

बचपन से ही अहमदाबाद नारायणपुरा सेंटर में पूरे परिवार सहित जाती थी। मेरी तीनों बहनें भी आती थी। आज तीनों बहनों अफ्रीका, नैरोबी में ईश्वरीय सेवा में उपस्थित हैं। हम चारों बहनें बाल शिविर में जाते थे, जिसके कारण हम बच्चों में अच्छे संस्कारों का सिंचन हुआ। बाल शिविर के कारण मेरे में अनेक कलाओं का विकास हुआ। जो आज मुझे अपने समर्पित जीवन में उपयोगी है। हम मधुबन में आकर बाबा के गीतों पर नृत्य, नाटक और भाषण करते थे। दादी जी की मधुर वाणी ने बाबा एवं ब्राह्मण परिवार के प्रति हमारी श्रेष्ठ भावनाओं को जगाया।

ब्र.कु. संगीता
राजयोग शिक्षिका, सोला, अहमदाबाद

सन् 2013 में हुए बाल व्यक्तित्व विकास शिविर में मंचस्थ हैं ब्र.कु. निर्वैर, ब्र.कु. मृत्युंजय, ब्र.कु. हरीश शुक्ल, ब्र.कु. मेहरचंद, ब्र.कु. प्रभा एवं अन्य।

प्रतिवर्ष बढ़ोत्तरी होती रही है। भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति श्री नीलम संजीव रेड्डी जी ने ईश्वरीय विश्व विद्यालय के बच्चों को राष्ट्रपति भवन दिल्ली में आमंत्रित कर उन्हें सम्मानित किया था। तत्कालीन राजस्थान के राज्यपाल श्री एम. चन्नारेड्डी जी ने पांडव भवन के प्रांगण में बाल उद्यान का उद्घाटन कर यह उद्यान बच्चों को समर्पित किया था। भारत के नामीग्रामी नेता, कलाकार, प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने इस बाल व्यक्तित्व विकास शिविर से प्रभावित होकर विश्वविद्यालय का सम्मान बढ़ाया। तात्पर्य यह है कि इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की शिक्षा बच्चों के लिए अति आवश्यक है। शिक्षा का क्षेत्र समाज को बनाने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। जब बच्चों की सभा में दादी प्रकाशमणि जी बच्चों से प्रतिज्ञा कराती थी कि चोरी नहीं करेंगे, झूठ नहीं बोलेंगे, सदा खुश रहेंगे, पढ़ाई नित्य करेंगे आदि छोटी से छोटी बात को भी जीवन में धारण करने के लिए प्रेरित करती थी। जीवन की ऐसी ही छोटी-छोटी बातों के प्रति जागरूकता बड़े होने पर व्यक्तित्व का विकास करने में सहज है। ऐसे ही दादियों के सान्निध्य में रखकर उनकी पालना लेना, प्यार पाना, योग से जीवन में एकाग्रता प्राप्त करना- ये सभी प्राप्तियां वर्तमान समय में कारगर है। इस शिक्षा द्वारा प्राप्त व्यक्तित्व का सम्मान विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशमणि जी की प्रेरणा से 2003 में रजत जयन्ति समारोह के रूप में मनाया गया। इसके उपलक्ष्य में स्मारिका प्रकाशित की गई थी और स्मृति चिह्न देकर सभी बच्चों का सम्मान किया गया था जिसकी सर्वत्र प्रशंसा हुई थी।

वर्तमान समय एक-एक व्यक्ति जीवन में मूल्यों की खोज कर रहा है। ये खोज यहाँ पूर्ण होती है। प्रेम, पवित्रता, बंधुत्व, शान्ति, खुशी, संतोष, आनंद - ये सारे शब्दों का हल समाज के दिग्गज नहीं ढूंढ पाते थे, इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में सहज प्राप्त होते देख विश्व आज आश्चर्यचकित है। आज यह विद्यालय बच्चों से लेकर बड़ों तक सभी को ऐसी शिक्षा प्रदान कर रहा है कि एक शिक्षा प्रभाग के साथ-साथ समाज के लिए दूसरे 19 प्रभाग इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय ने दिए हैं। ऐसे विद्यालय को कोटि-कोटि बधाई।

बच्चों के कोमल हृदय में प्रेम, पवित्रता, शान्ति, आनंद, खुशी आदि विषयों की शिक्षा सहज रूप से आरोपित की जा सकती है। इसलिए प्रतिवर्ष पिछले 36 वर्षों से यह विद्यालय बाल व्यक्तित्व विकास शिविर के माध्यम से समाज को उत्तम चरित्र वाले नागरिक प्रदान करता आ रहा है।

जैसी शिक्षा, वैसी व्यवस्था

'जैसी शिक्षा, वैसी व्यवस्था' यह सत्य है। भारत देश शिक्षा के क्षेत्र में हमेशा से विश्व गुरू के रूप में विख्यात रहा है। दूसरे बड़े देश भले ही भौतिक शिक्षा में अपनी अलग पहचान रखते हैं परन्तु भारत देश में अलौकिक (ईश्वरीय), संस्कारित और मूल्यनिष्ठ शिक्षा के आगे पूरी दुनिया नतमस्तक रही है। वर्तमान समय में पुन: अलौकिक शिक्षा से नए समाज का निर्माण हो रहा है। यह एक ऐसी शिक्षा है जिससे न केवल व्यक्तित्व निर्माण होता है बल्कि सुन्दर, सुव्यवस्थित और मूल्यनिष्ठ समाज की भी स्थापना हो रही है।

लौकिक शिक्षा

जहां तक सवाल लौकिक शिक्षा का है। आज के युग में स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में ज्यादा से ज्यादा भौतिकवादी शिक्षा पर ही जोर दिया जाता है। इसका नतीजा हम सबके सामने हैं कि संस्कार विहीन समाज का तेजी से बढ़ना। न तो बच्चों का माता-पिता के प्रति सम्मान रहा और न ही शिक्षकों के प्रति। इसके कारण पारिवारिक संरचना छिन्न-भिन्न हो गई और वस्तुओं की कीमतें तो बढ़ीं, परन्तु इंसान की कीमतें कम हो गईं। यह इतने विशाल रूप में हो रहा है कि मानवता अपने स्थिति पर आंसू बहा रही है।

अलौकिक शिक्षा

अलौकिक (ईश्वरीय) शिक्षा का अर्थ है- भौतिक शिक्षा के साथ ईश्वरीय शिक्षा का समावेश। अलौकिक शिक्षा हमेशा सद्मार्ग, सद्भाव तथा वसुधैव कुटुम्बकम् का मार्ग खोलती है। सतयुग, त्रेतायुग के बाद द्वापरयुग में आध्यात्मिकता और संस्कारों को जीवन में उतारने के लिए अलौकिक शिक्षा का कार्य गुरूकुल आदि को था जिसमें शिक्षा लेने वाले बच्चे संस्कारित और मर्यादाओं का पालन करने वाले होते थे। अब स्वयं परमात्मा हमें ईश्वरीय शिक्षा देकर दैवी स्वराज्य में जाने योग्य बना रहे हैं।

मूल्यनिष्ठ शिक्षा से ही बनेगा श्रेष्ठ समाज

मूल्यनिष्ठ शिक्षा श्रेष्ठ समाज और सुखी परिवार की धुरी है। शिक्षा ही वह स्तर है, जिससे व्यक्ति के व्यक्तित्व और व्यवहार की एक कड़ी के रूप में सामने आता है। आज स्कूलों, कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों में दी जाने वाली शिक्षा से निश्चित तौर पर भारत के युवा प्रतिभावान बनकर पूरी दुनिया में परचम फहरा रहे हैं। परन्तु इन युवाओं से मूल्यों और संस्कारों की अनुपस्थिति चिंताजनक है।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना सन् 1937 में ही हो गई थी। परमात्मा प्रदत्त यह ईश्वरीय ज्ञान अर्थात् मूल्यनिष्ठ शिक्षा का शुभारम्भ धीरे-धीरे लोगों के बीच अपनी अलग पहचान बनाने लगा। उस दौर में लोगों को यह यकीन ही नहीं होता था कि भौतिकवादी युग में मूल्यनिष्ठ शिक्षा को अपने जीवन का अंग बनाया जा सकता है। परन्तु परमात्मा की डायरेक्ट शिक्षा एवं आध्यात्मिक शक्ति से जो लोग जुड़े, उनके अन्दर मूल्यों का समावेश होता गया। लोगों को साफ तौर पर दिखने लगा कि ये लोग इस दुनिया में भी असाधारण हैं। परन्तु इस कार्य की वृहद् रूप से नींव सन् 1976 में पड़ी। पहले यह शिक्षा बच्चों के कैम्प के रूप में प्रारम्भ की गई। कई वर्षों तक यह सिलसिला यूं ही चलता रहा। बड़ी संख्या में नौनिहाल इस अभियान का हिस्सा बने और आज लाखों भाई-बहनें मूल्यों से ओत-प्रोत होकर इस मुहिम का हिस्सा बन चुके हैं।

शिक्षा प्रभाग का गठन

चूंकि समय के साथ सब कुछ व्यावसायिकरण का रूप लेता गया। शिक्षा ने भी करवट बदली और पूर्ण रूप से भौतिक शिक्षा में तब्दील हो गई। ब्रह्माकुमारी संस्थान ने मूल्यनिष्ठ शिक्षा के अभियान को गति देने के लिए सन् 1982 में राजयोग शिक्षा एवं शोध प्रतिष्ठान के तहत शिक्षा प्रभाग का गठन किया।

यह इसलिए भी जरूरी था कि यह प्रभाग विशेषकर समाज में शिक्षा क्षेत्र से जुड़े हुए लोगों में परमात्मा की शिक्षा अर्थात् मूल्यनिष्ठ शिक्षा के रूप में प्रतिस्थापित किया जा सके। इसके बाद सम्मेलनों, संगोष्ठियों और अनेक अभियानों से गुजरकर अब यह एक पाठ्यक्रम का रूप ले चुका है।

हजारों लोग हुए इस मुहिम में शामिल

इन अभियानों के दौरान अब तक हजारों शिक्षक, प्रोफेसर, विश्वविद्यालयों के कुलपति, उपकुलपति, निदेशक, व्याख्याता समेत हजारों की संख्या में लोगों ने इस मूल्यनिष्ठ शिक्षा को अपने जीवन का अंग बनाया।

वर्तमान समय में, यह शिक्षा कई विश्वविद्यालयों में पूर्ण रूप से लागू हो चुकी है जिसके सुखद एवं बेहतर परिणाम सामने आने लगे हैं। अब तो खुलकर शिक्षाविद्ों ने इसे प्रत्येक विश्वविद्यालयों, स्कूलों एवं कॉलेजों में भी अपनाने के लिए प्रयासरत है ताकि मूल्य विहीन होते युवा एवं समाज को इस भारी नैतिक गिरावट से रोका जा सके। परमात्मा की यह मुहिम तेजी से विस्तार को पा ही रही है। अब तो केन्द्र सरकार ने सभी केन्द्रीय विद्यालयों में भी इसे नियमित रूप से पढ़ाये जाने की सहमति दी है ताकि आने वाले कल के बच्चों को एक नया भविष्य, आदर्श और उच्च संस्कार दिया जा सके।

स्वयं परमपिता परमात्मा दे रहे हैं शिक्षा

अब स्वयं गुरूओं के गुरू, शिक्षकों के शिक्षक परमपिता परमात्मा शिव इस दुनिया में अवतरित होकर नर को श्री नारायण और नारी को श्री लक्ष्मी बनाने की महान शिक्षा दे रहे हैं। यह केवल भारत ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया के लिए सुखद समाचार है। इसलिए हे मनुष्यात्माओं! परमात्मा इस धरती पर आ चुके हैं और ईश्वरीय शिक्षा लेने का यह सुनहरा अवसर कहीं छूट न जाए।

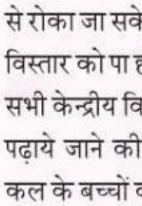

डॉ. ब्र.कु. पांड्यामणि
निदेशक, दूरस्थ शिक्षा प्रभाग
ब्रह्माकुमारीज़

इन विश्वविद्यालयों ने अपनाई मूल्य शिक्षा

इस मूल्यनिष्ठ शिक्षा पाठ्यक्रम को देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों ने अपने यहाँ लागू किया है, जिसमें निम्नलिखित पाठ्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है:

अन्नामलाई विश्वविद्यालय, अन्नामलाई नगर, तमिलनाडु

संचालित पाठ्यक्रम

1. मूल्य शिक्षा एवं अध्यात्म में एक वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा।
2. मूल्य शिक्षा एवं अध्यात्म में एक वर्षीय डिप्लोमा।
3. स्व-प्रबंधन एवं आपदा प्रबंधन एमबीए में दो वर्षीय पाठ्यक्रम।
4. मूल्य शिक्षा एवं अध्यात्म में एमएससी दो वर्षीय पाठ्यक्रम।
5. स्वास्थ्य सुरक्षा में एक वर्षीय पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा।

अन्नामलाई विश्वविद्यालय, तमिलनाडु में 2009-10 से ब्रह्माकुमारीज़ के संयुक्त तत्वावधान में कई पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं जिसमें प्रवेश लेकर आप अपना भविष्य संवार सकते हैं और अपने जीवन को मूल्यनिष्ठ बना सकते हैं।

यशवंतराव चव्हाण खुला वि.वि., नासिक, महाराष्ट्र

संचालित पाठ्यक्रम

1. मूल्य एवं अध्यात्म शिक्षा में एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम।
2. मूल्य एवं अध्यात्म शिक्षा में एडवांस डिप्लोमा पाठ्यक्रम।
3. मूल्य एवं अध्यात्म शिक्षा में बीए पाठ्यक्रम।

यशवंतराव खुला विश्वविद्यालय, नासिक, महाराष्ट्र में यह पाठ्यक्रम 2012-13 से ब्रह्माकुमारीज़ के संयुक्त तत्वाधान में संचालित किए जा रहे हैं।

रामकृष्ण धर्मार्थ फाउण्डेशन वि.वि., भोपाल, मध्य प्रदेश

संचालित पाठ्यक्रम

1. स्व-प्रबन्धन एवं आपात प्रबन्धन (क्राइसिस मैनेजमेंट) में एमबीए पाठ्यक्रम।
2. मूल्य एवं अध्यात्म शिक्षा में पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा पाठ्यक्रम।
3. मूल्य एवं अध्यात्म शिक्षा में एमएससी पाठ्यक्रम।

रामकृष्ण धर्मार्थ फाउण्डेशन विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश में यह पाठ्यक्रम 2013 से ब्रह्माकुमारीज़ के संयुक्त तत्वाधान में संचालित किए जा रहे हैं।

डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय, डिब्रूगढ़, आसाम

संचालित पाठ्यक्रम

1. मूल्य एवं अध्यात्म शिक्षा में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम।
2. मूल्य एवं अध्यात्म शिक्षा में एमएससी पाठ्यक्रम।
3. स्व-प्रबन्धन एवं आपात प्रबन्धन (क्राइसिस मैनेजमेंट) में एमबीए पाठ्यक्रम।

डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय, डिब्रूगढ़, आसाम में यह पाठ्यक्रम 2013 से ब्रह्माकुमारीज़ के संयुक्त तत्वाधान में संचालित किए जा रहे हैं।

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा, राजस्थान

संचालित पाठ्यक्रम

1. मूल्य शिक्षा और अध्यात्म में प्रमाण-पत्र।
2. मूल्य एवं अध्यात्म शिक्षा में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम।

वर्धमान महावीर खुला वि.वि., कोटा, राजस्थान में यह पाठ्यक्रम 2013 से ब्रह्माकुमारीज़ के संयुक्त तत्वाधान में संचालित किए जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त अन्य विश्वविद्यालयों में भी इस पाठ्यक्रम को लागू करने पर विचार किया जा रहा है जिसमें वेस्ट इंडीज के वि.वि.; तमिलनाडु के श्री रामास्वामी नायडू, मेमोरियल कॉलेज, सत्तूर; गणपति युनिवर्सिटी, मेहसाना इत्यादि शामिल हैं।

मूल्य शिक्षा का उद्देश्य

वर्तमान समय सभी क्षेत्रों में मूल्यों की गिरावट हो रही है, जिसका परिणाम जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में देखने को मिल रहा है। ऐसे संकट के समय में मूल्यों को परिवर्तन करने, जीवन में खुशहाली और सम्पन्नता लाने के लिए आध्यात्मिक एवं मूल्य शिक्षा ही एकमात्र उपाय है।

आज समाज में हिंसा, आतंकवाद, भय, अस्थिरता और विभिन्न प्रकार की समस्याएं बढ़ती ही जा रही हैं। इनको रोकने के लिए हरेक व्यक्ति के जीवन में पर्याप्त ज्ञान, गुण और मनोबल की आवश्यकता है। मनोबल को बढ़ाना और जीवन को दिव्यीकरण व संस्कारों को श्रेष्ठ बनाना ही मूल्य शिक्षा का उद्देश्य है। इस प्रयास में शिक्षा प्रभाग विभिन्न शिक्षकों, अभिभावकों एवं समस्त सामाजिक व्यवस्थाओं में परिवर्तन लाने के लिए मूल्य एवं आध्यात्मिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में जोड़कर विभिन्न स्तर पर जैसे स्कूल, कॉलेजों तथा शिक्षकों को भी प्रशिक्षण देने का प्रयास चल रहा है। इसमें अभी तक कई विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों में इसका सफल प्रयोग हुआ है। मूल्यों की शिक्षा प्रदान करने का कार्य हमें सिर्फ शिक्षकों के कंधों पर ही नहीं डाल देना चाहिए बल्कि मूल्यों की शिक्षा को अन्य क्षेत्रों में भी लागू करना चाहिए जिससे लोग मूल्यों तथा नैतिकता के सम्बन्ध में भी अपने उत्तरदायित्व को समझ सकें। मुझे आशा है कि इस सम्बन्ध में एक नए चरित्र निर्माण की क्रांति आएगी जो नए भारत को विकसित करने में सफल होगी।

ब्र.कु. मृत्युंजय, उपाध्यक्ष शिक्षा प्रभाग

1. भरूच में शिक्षा प्रभाग की मीटिंग को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. मृत्युंजय तथा अन्य। 2. कैदियों को डिग्री देने के पश्चात् ग्रुप फोटो में है सरला दीदी एवं अन्य। 3. निरमा युनिवर्सिटी, अहमदाबाद के प्रेसीडेंट को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. मृत्युंजय एवं अन्य। 4. गणपत युनिवर्सिटी, मेहसाना के कुलपति श्री महेन्द्र शर्मा एवं रजिस्ट्रार श्री अमित पटेल के साथ मूल्य शिक्षा और आध्यात्मिकता के पाठ्यक्रम के विषय में चर्चा करते हुए ब्र.कु. मृत्युंजय एवं डॉ. ब्र.क्र. हरीश शुक्ल। 5. कड़ी सर्व विश्वविद्यालय, गांधी नगर के कुलपति श्री सरदार साहब को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. मृत्युंजय। 6. हेमचंद्राचार्य उत्तर गुजरात विश्वविद्यालय के कुलपति श्री आर.एल. गोदारा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. नीलम बहन।

Education Wing HQs. Office
B.K. Mruthyunjaya, Vice-Chairperson, Education Wing
Brahma kumaris, Value Education Centre
Anand Bhawan, Shantivan, **Abu Road - 307 510 (Raj.)**
E-mail: educationwing@bkivv.org

Education Wing, National Co-ordinators Office
B.K. Dr. Harish Shukla, National Coordinator, Education Wing
Sukh Shanti Bhawan, Kankaria, **Ahmedabad - 380 022 (Guj.)**
Mob. No. : +91 9427638887 **Fax :** 079-25325150
E-mail: harishshukla53@yahoo.com

To,